ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class 7 वसंत भाग-2

Subject- Hindi Second Language

Topic- Lesson 2

कहानी - चिड़िया की बच्ची
लेखक- जैनेंद्र कुमार

अध्यापिका :- नीलम सौंखला

©ISWK

18/04/2021

वसंत भाग–दो
कक्षा- सातवीं

पाठ– चिड़िया की बच्ची
(कहानी)
लेखक– जैनेन्द्र कुमार

इं. अनु कुमारी

माधवदास ने अपनी संगमरमर की नयी कोठी बनवाई है। उसके सामने बहुत सुहावना बगीचा भी लगवाया है। उनको कला से बहुत प्रेम है। धन की कमी नहीं है और कोई व्यसन छू नहीं गया है। सुंदर अभिरुचि के आदमी हैं। फूल-पौधे, रकाबियों से हौज़ों में लगे फव्वारों में उछलता हुआ पानी उन्हें बहुत अच्छा लगता है। समय भी उनके पास काफ़ी है। शाम को जब दिन की गरमी ढल जाती है और आसमान कई रंग का हो जाता है तब कोठी के बाहर चबूतरे पर तख्त डलवाकर मसनद के सहारे वह गलीचे पर बैठते हैं और प्रकृति की छटा निहारते हैं। इनमें मानो उनके मन को तृप्ति मिलती है। मित्र हुए तो उनसे विनोद-चर्चा करते हैं, नहीं तो पास रखे हुए फर्शी हुक्के की सटक को मुँह में दिए खयाल ही खयाल में संध्या को स्वप्न की भाँति गुज़ार देते हैं।

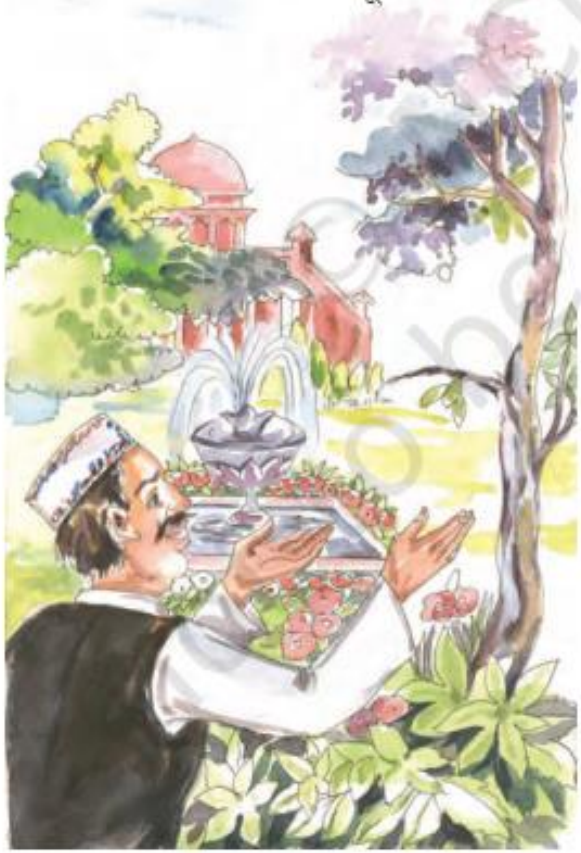

आज कुछ-कुछ बादल थे। घटा गहरी नहीं थी। धूप का प्रकाश उनमें से छन-छनकर आ रहा था। माधवदास मसनद के सहारे बैठे थे। उन्हें ज़िंदगी में क्या स्वाद नहीं मिला है? पर जी भरकर भी कुछ खाली सा रहता है।

शब्दार्थ –

संगमरमर– सफ़ेद चिकना पत्थर
कोठी – बड़ा मकान
सुहावना – मनभावन
व्यसन – बुरी आदतें जैसे शराब आदि पीना
अभिरुचि – दिलचस्पी
रकाबियों – प्लेट /तश्तरीनुमा
तख्त– लकड़ी से बनी चारपाई
मसनद – तकिया
गलीचा – कालीन
छटा – सुंदरता
तृप्ति – संतोष
विनोद-चर्चा- मन बहलाने की बातें
खयाल – विचार
संध्या – शाम
स्वप्न – सपना
प्रकाश – रोशनी

उस दिन संध्या समय उनके देखते-देखते सामने की गुलाब की डाली पर एक चिड़िया आन बैठी। चिड़िया बहुत सुंदर थी। उसकी गरदन लाल थी और गुलाबी होते-होते किनारों पर ज़रा-ज़रा नीली पड़ गई थी। पंख ऊपर से चमकदार स्याह थे। उसका नन्हा सा सिर तो बहुत प्यारा लगता था और शरीर पर चित्र-विचित्र चित्रकारी थी। चिड़िया को मानो माधवदास की सत्ता का कुछ पता नहीं था और मानो तनिक देर का आराम भी उसे नहीं चाहिए था। कभी पर हिलाती थी, कभी फुदकती थी। वह खूब खुश मालूम होती थी। अपनी नन्ही सी चोंच से प्यारी-प्यारी आवाज़ निकाल रही थी।

माधवदास को वह चिड़िया बड़ी मनमानी लगी। उसकी स्वच्छंदता बड़ी प्यारी जान पड़ती थी। कुछ देर तक वह उस चिड़िया का इस डाल से उस डाल थिरकना देखते रहे। इस समय वह अपना बहुत-कुछ भूल गए। उन्होंने उस चिड़िया से कहा, "आओ, तुम बड़ी अच्छी आईं। यह बगीचा तुम लोगों के बिना सूना लगता है। सुनो चिड़िया तुम खुशी से यह समझो कि यह बगीचा मैंने तुम्हारे लिए ही बनवाया है। तुम बेखटके यहाँ आया करो।"

चिड़िया पहले तो असावधान रही। फिर जानकर कि बात उससे की जा रही है, वह एकाएक तो घबराई। फिर संकोच को जीतकर बोली, "मुझे मालूम नहीं था कि यह बगीचा आपका है। मैं अभी चली जाती हूँ। पलभर साँस लेने मैं यहाँ टिक गई थी।"

माधवदास ने कहा, "हाँ, बगीचा तो मेरा है। यह संगमरमर की कोठी भी मेरी है। लेकिन, इस सबको तुम अपना भी समझ सकती हो। सब कुछ तुम्हारा है। तुम कैसी भोली हो, कैसी प्यारी हो। जाओ नहीं, बैठो। मेरा मन तुमसे बहुत खुश होता है।"

चिड़िया बहुत-कुछ सकुचा गई। उसे बोध हुआ कि यह उससे गलती तो नहीं हुई कि वह यहाँ बैठ गई है। उसका थिरकना रुक गया। भयभीत-सी वह बोली, "मैं थककर यहाँ बैठ गई थी। मैं अभी चली जाऊँगी। बगीचा आपका है। मुझे माफ़ करें!"

शब्दार्थ-

आन – आकार
स्याह – काला
चित्र – विचित्र---अजीब तरह के
तनिक – जरा भी
स्वच्छंदता – आज़ादी
बेखटके – बिना किसी डर के
संकोच - शर्म / शक
पल भर – क्षण भर
सकुचा – शर्म से
बोध – ज्ञान
भयभीत – डरना
स्वच्छंदता – आज़ादी

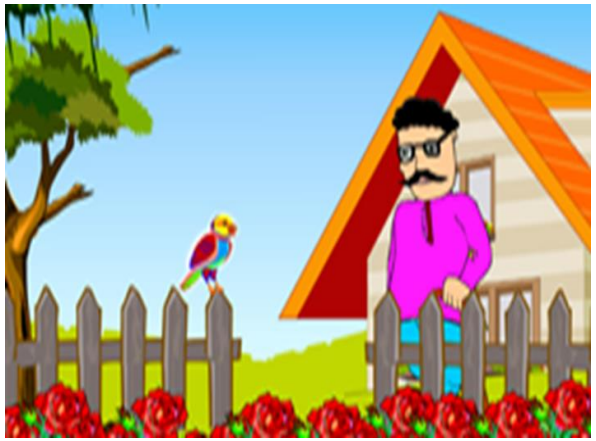

© NCERT not to be republished

माधवदास ने कहा, "मेरी भोली चिड़िया, तुम्हें देखकर मेरा चित्त प्रफुल्लित हुआ है। मेरा महल भी सूना है। वहाँ कोई भी चहचहाता नहीं है। तुम्हें देखकर मेरी रागनियों का जी बहलेगा। तुम कैसी प्यारी हो, यहाँ ही तुम क्यों न रहो?"

चिड़िया बोली, "मैं माँ के पास जा रही हूँ, सूरज की धूप खाने और हवा से खेलने और फूलों से बात करने मैं ज़रा घर से उड़ आई थी, अब साँझ हो गई है और माँ के पास जा रही हूँ। अभी-अभी मैं चली जा रही हूँ। आप सोच न करें।"

माधवदास ने कहा, "प्यारी चिड़िया, पगली मत बनो। देखो, तुम्हारे चारों तरफ़ कैसी बहार है। देखो, वह पानी खेल रहा है, उधर गुलाब हँस रहा है। भीतर महल में चलो, जाने क्या-क्या न पाओगी! मेरा दिल वीरान है। वहाँ कब हँसी सुनने को मिलती है? मेरे पास बहुत सा सोना-मोती है। सोने का एक बहुत सुंदर घर मैं तुम्हें बना दूँगा, मोतियों की झालर उसमें लटकेगी। तुम मुझे खुश रखना। और तुम्हें क्या चाहिए! माँ के पास बताओ क्या है? तुम यहाँ ही सुख से रहो, मेरी भोली गुड़िया।"

चिड़िया इन बातों से बहुत डर गई। वह बोली, "मैं भटककर तनिक आराम के लिए इस डाली पर रुक गई थी। अब भूलकर भी ऐसी गलती नहीं होगी। मैं अभी यहाँ से उड़ी जा रही हूँ। तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आती हैं। मेरी माँ के घोंसले के बाहर बहुतेरी सुनहरी धूप बिखरी रहती है। मुझे और क्या करना है? दो दाने माँ ला देती है और जब मैं पर खोलने बाहर जाती हूँ तो माँ मेरी बाट देखती रहती है। मुझे तुम और कुछ मत समझो, मैं अपनी माँ की हूँ।"

चित्त-मन/हृदय। **प्रफुल्लित**-प्रसन्न। **साँझ**-शाम। **विरान**-उदास। **बाट देखना**-प्रतीक्षा करना।

माधवदास ने कहा, "भोली चिड़िया, तुम कहाँ रहती हो? तुम मुझे नहीं जानती हो?"

चिड़िया, "मैं माँ को जानती हूँ, भाई को जानती हूँ, सूरज को और उसकी धूप को जानती हूँ। घास, पानी और फूलों को जानती हूँ। महामान्य, तुम कौन हो? मैं तुम्हें नहीं जानती।"

माधवदास, "तुम भोली हो चिड़िया! तुमने मुझे नहीं जाना, तब तुमने कुछ नहीं जाना। मैं ही तो हूँ सेठ माधवदास। मेरे पास क्या नहीं है! जो माँगो, मैं वही दे सकता हूँ।"

चिड़िया, "पर मेरी तो छोटी सी जात है। आपके पास सब कुछ है। तब मुझे जाने दीजिए।"

माधवदास, "चिड़िया, तू निरी अनजान है। मुझे खुश करेगी तो तुझे मालामाल कर सकता हूँ।"

चिड़िया, "तुम सेठ हो। मैं नहीं जानती, सेठ क्या होता है। पर सेठ कोई बड़ी बात होती होगी। मैं अनसमझ ठहरी। माँ मुझे बहुत प्यार करती है। वह मेरी राह देखती होगी। मैं मालामाल होकर क्या होऊँगी, मैं नहीं जानती। मालामाल किसे कहते हैं? क्या मुझे वह तुम्हारा मालामाल होना चाहिए?"

सेठ, "अरी चिड़िया तुझे बुद्धि नहीं है। तू सोना नहीं जानती, सोना? उसी की जगत को तृष्णा है। वह सोना मेरे पास ढेर का ढेर है। तेरा घर समूचा सोने का होगा। ऐसा पिंजरा बनवाऊँगा कि कहीं दुनिया में न होगा, ऐसा कि तू देखती रह जाए। तू उसके भीतर थिरक-फुदककर मुझे खुश करियो। तेरा भाग्य खुल जाएगा। तेरे पानी पीने की कटोरी भी सोने की होगी।"

चिड़िया, "वह सोना क्या चीज़ होती है?"

सेठ, "तू क्या जानेगी, तू चिड़िया जो है। सोने का मूल्य सीखने के लिए तुझे बहुत सीखना है। बस, यह जान ले कि सेठ माधवदास तुझसे बात कर रहा है। जिससे मैं बात तक कर लेता हूँ उसकी किस्मत खुल जाती है। तू अभी जग का हाल नहीं जानती। मेरी कोठियों पर कोठियाँ हैं, बगीचों पर बगीचे हैं।

निरी—बिल्कुल। ***अनजान***—नासमझ। ***राह देखना***—इन्तजार करना। ***मालामाल***—बहुत धन। ***तृष्णा***—चाह।

© NCERT not to be republished

दास-दासियों की संख्या नहीं है। पर तुझसे मेरा चित्त प्रसन्न हुआ है। ऐसा वरदान कब किसी को मिलता है? री चिड़िया! तू इस बात को समझती क्यों नहीं?"

चिड़िया, "सेठ, मैं नादान हूँ। मैं कुछ समझती नहीं। पर, मुझे देर हो रही है। माँ मेरी बाट देखती होगी।"

सेठ, "ठहर-ठहर, इस अपने पास के फूल को तूने देखा? यह एक है। ऐसे अनगिनती फूल हैं। ऐसे अनगिनती फूल मेरे बगीचों में हैं। वे भाँति-भाँति के रंग के हैं। तरह-तरह की उनकी खुशबू हैं। चिड़िया, तैंने मेरा चित्त प्रसन्न किया है और वे सब फूल तेरे लिए खिला करेंगे। वहाँ घोंसले में तेरी माँ है, पर माँ क्या है? इस बहार के सामने तेरी माँ क्या है? वहाँ तेरे घोंसले में कुछ भी तो नहीं है। तू अपने को नहीं देखती? कैसी सुंदर तेरी गरदन। कैसी रंगीन देह! तू अपने मूल्य को क्यों नहीं देखती? मैं तुझे सोने से मढ़कर तेरे मूल्य को चमका दूँगा। तैंने मेरे चित्त को प्रसन्न किया है। तू मत जा, यहीं रह।"

चिड़िया, "सेठ, मैं अपने को नहीं जानती। इतना जानती हूँ कि माँ मेरी माँ है और मुझे यहाँ देर हो रही है। सेठ, मुझे रात मत करो, रात में अँधेरा बहुत हो जाता है और मैं राह भूल जाऊँगी।"

सेठ ने कहा, "अच्छा, चिड़िया जाती हो तो जाओ। पर, इस बगीचे को अपना ही समझो। तुम बड़ी सुंदर हो।"

यह कहने के साथ ही सेठ ने एक बटन दबा दिया। उसके दबने से दूर कोठी के अंदर आवाज़ हुई जिसे सुनकर एक दास झटपट भागकर बाहर आया। यह सब छनभर में हो गया और चिड़िया कुछ भी नहीं समझी।

सेठ कहते रहे, "तुम अभी माँ के पास जाओ। माँ बाट देखती होगी। पर, कल आओगी न? कल आना, परसों आना, रोज़ आना।"

यह कहते-कहते दास को सेठ ने इशारा कर दिया और वह चिड़िया को पकड़ने के जतन में चला।

सेठ कहते रहे, "सच तुम बड़ी सुंदर लगती हो! तुम्हारे भाई-बहिन हैं? कितने भाई-

प्रसन्न–खुश। ***नादान***–नासमझ। ***अनगिनत***–जिनकी गिनती न हो।

उजेला–उजला। **चैन**–शांति। **भय**–डर। **कठोर**–सख्त। **स्पर्श**–छूना।

चिड़िया, "दो बहिन, एक भाई। पर मुझे देर हो रही है।"

"हाँ हाँ जाना। अभी तो उजेला है। दो बहन, एक भाई है? बड़ी अच्छी बात है।"

पर चिड़िया के मन के भीतर जाने क्यों चैन नहीं था। वह चौकन्नी हो–हो चारों ओर देखती थी। उसने कहा, "सेठ मुझे देर हो रही है।"

सेठ ने कहा, "देर अभी कहाँ? अभी उजेला है, मेरी प्यारी चिड़िया! तुम अपने घर का इतने और हाल सुनाओ। भय मत करो।"

चिड़िया ने कहा, "सेठ मुझे डर लगता है। माँ मेरी दूर है। रात हो जाएगी तो राह नहीं सूझेगी।"

इतने में चिड़िया को बोध हुआ कि जैसे एक कठोर स्पर्श उसके देह को छू गया। वह चीख देकर चिचियाई और एकदम उड़ी। नौकर के फैले हुए पंजे में वह आकर भी नहीं आ सकी। तब वह उड़ती हुई एक साँस में माँ के पास गई और माँ की गोद में गिरकर सुबकने लगी , " ओ माँ , ओ माँ "!

चिड़िया की बच्ची

माँ ने बच्ची को छाती से चिपटाकर पूछा, "क्या है मेरी बच्ची, क्या है?"

पर, बच्ची काँप-काँपकर माँ की छाती से और चिपक गई, बोली कुछ नहीं, बस सुबकती रही, "ओ माँ, ओ माँ!"

बड़ी देर में उसे ढाढ़स बँधा और तब वह पलक मींच उस छाती में ही चिपककर सोई। जैसे अब पलक न खोलेगी।

□ जैनेंद्र कुमार

: ढ़ाढस--हिम्मत। चिपकना--पकड़ना।

चिड़िया की बच्ची

कक्षा 7

वसंत-2

SUMMARY

Short story-

एक दिन एक सेठ माधवदास अपने घर के बाहर बगीचे में अकेला खड़ा था तभी एक चिड़िया उड़ कर आई उसने उस चिड़िया से कहा अरे सुंदर चिड़िया, तुम बड़ी अच्छी आई यह बगीचा तुम्हारे लिए ही है।

मुझे मालूम नहीं था कि यह बगीचा आप का है मैं अभी चली जाती हूँ ।

चिड़िया पकड़े जाने के डर से चीख मार कर उड़ जाती है- हाँ बागीचा तो मेरा है पर तुम इसे अपना ही समझो, तुम मुझे बहुत अच्छी लगी। माधवदास नौकर को चिड़िया पकड़ने के लिए इशारा करते हुए- मेरी भोली चिड़िया मेरा मन तुमसे बहुत खुश है तुम कितनी प्यारी हो, तुम यहीं रह जाओ मैं माँ के पास जा रही हूँ, सूरज की धूप खाने और हवा से खेलने और फूलों से बात करने, मैं जरा इधर उड़ आयी थी मैं नादान हूँ, मैं कुछ नहीं समझती मुझे देर हो रही है, माँ मेरी राह देखती होगी ।

तुम यहीं रुक जाओ मैं तुम्हें मालामाल कर दूँगा तुम्हारे लिए मैं सोने का घर और मोतियों की झालर बनवाऊगा ।

माधवदास चिड़िया को कैद करने के लिए लालच देते हुए.....सेठ मुझे देर हो रही है मेरी माँ दूर है पहुंचने में रात हो जाएगी। तुम अभी माँ के पास जाओ कल आना, परसों आना, रोज़ आना। संदेश-अपने परिवार के सदस्यों के साथ रहने में ही सुख है, पैसे से कोई भी सुख नहीं खरीदा जा सकता।

क्या है मेरी बच्ची, क्या हुआ? बच्ची काँप-काँप कर माँ की छाती से चिपककर सुबकती रही....माँ बच्ची को छाती से चिपककर पूछते हुए...

पाठ का सारांश

माधव दास एक धनी व्यक्ति हैं। उन्होंने आलीशान कोठी बनवाई है। उसके सामने सुंदर बगीचा लगवाया है। वह कला के प्रेमी हैं और उनमें कोई बुरी आदत नहीं है। उनके पास खाली समय भी बहुत रहता है। अक्सर शाम के समय वह बाहर चबूतरे पर तख्त डलवाकर मसनद के सहारे गलीचे में बैठ प्रकृति की छटा निहारते रहते। ऐसी ही एक शाम उन्होंने एक नन्ही चिड़िया को अपने बगीचे में लगे गुलाब की डाली पर आकर बैठते देखा। वह चिड़िया बहुत सुंदर थी। माधवदास की सत्ता से बेखबर वह चिड़िया प्रसन्नता से फुदक रही थी और प्यारी-प्यारी आवाज़ें निकाल रही थी। माधवदास को उस चिड़िया की मनमानी और स्वच्छंदता बड़ी लुभावनी लगी। थोड़ी देर तक उसे देखने रहने के बाद उन्होंने चिड़िया से कहा कि यह बगीचा उन्होंने उसी के लिए बनवाया है। उसके बिना यह सूना था। वह जब चाहे बेधड़क यहाँ चली आया करे। माधवदास की बात सुन कर चिड़िया घबरा जाती है। वह कहती है कि उसे नहीं पता था कि यह बगीचा उनका है। थोड़ी देर सुस्ताने के लिए वह यहाँ बैठ गई थी, अभी चली जाएगी।

माधवदास उस चिड़िया की सुंदरता और चंचलता से मुग्ध हो गए थे। वह चाहते थे कि वह हमेशा के लिए उनके पास रह जाए और उनके जीवन के खालीपन को अपनी चहचहाटों से भर दें। वह उसे रोकने के लिए कई तरह के प्रलोभन देते हैं। वह कहते हैं कि उसकी हर इच्छा पूरी करेंगे, उसके लिए सोने का घर बनवा देंगे, उसमें उसके लिए मोतियों की झालर लगवाएँगे, उसके सुख की सारी व्यवस्था करेंगे। माधवदास कहते हैं कि उनके पास सब कुछ है। चिड़िया जो माँगेगी, वह उसे दे सकते हैं, बस वह उन्हें खुश कर दे। माधवदास उसे सोने का महत्व बताते हैं और कहते हैं कि उसके लिए सोने का घर बनवाएँगे और सोने की कटोरी में ही उसे खाना-पीना देंगे। वह उसे प्रसन्न रखने का वादा भी करते हैं।

माधवदास के प्रलोभनों से भयभीत चिड़िया किसी भी तरह वहाँ रुकने को तैयार नहीं होती है। उसे लगता है जैसे वहाँ आकर उसने बहुत बड़ी गलती कर दी। वह अपनी माँ के पास लौट जाना चाहती है। उसकी माँ उसकी राह देख रही होगी। वह माधवदास से कहती है कि वह उन्हें नहीं जानती। सोना क्या होता है, उसे नहीं पता। वह केवल सूरज, धूप, घास, पानी और फूल को जानती है। वह उनके बगीचे में नहीं रहेगी। अपने घर चली जाएगी।

माधवदास उस चिड़िया को किसी तरह फँसाकर अपने पास रखना चाहते हैं। चिड़िया बार-बार कहती है कि उसे देर हो रही है। वह अपनी माँ के पास अपने घर जाना चाहती है। लेकिन माधवदास बार-बार बातों में उलझाकर उसे रोक लेते हैं। इसी बीच माधवदास एक बटन दबा देते हैं जिसकी आवाज से एक नौकर दौड़ा आता है। माधवदास ने इशारे से उसे चिड़िया को पकड़ने को कहा। चिड़िया इन सब बातों से अनजान थी क्योंकि बड़ी चतुराई से माधवदास उसे अपनी बातों में फँसाए हुए थे। वह उससे पूछ रहे थे कि उसके कितने भाई बहन हैं? वह जाना चाहती है तो जाए पर कल फिर आने का वादा करे। वह उससे कह रहे थे कि अभी तो बहुत उजाला है, डरो मत, थोड़ा रुक कर जाना। लेकिन चिड़िया जाने की रट लगाए थी।

अचानक चिड़िया ने किसी कठोर स्पर्श को महसूस किया। वह चीख मारकर चिल्लाई और एकदम से उड़ी। सेठ का नौकर उसे पकड़ कर भी नहीं पकड़ सका। चिड़िया एक साँस से उड़ती हुई अपनी माँ के पास पहुँची और उसकी गोद में गिरकर सुबकने लगी। माँ के पूछने पर वह कुछ बता नहीं सकी। बड़ी देर तक चिड़िया की माँ उसे ढाढ़स बँधाती रही और वह माँ की छाती से चिपककर सो गई। ऐसे जैसे कभी पलक खोलेगी ही नहीं क्योंकि वह बहुत डर गई थी।

शब्दार्थ–पृष्ठ संख्या-67 : ***संगमरमर***–एक तरह का चिकना और चमकदार पत्थर। ***कोठी***–बड़ा मकान। ***सुहावना***–मनभावन। ***अभिरुचि***–दिलचस्पी। ***मसनद***–तकिया। ***गलीचा***–कालीन। ***तृप्ति***–संतुष्टि। ***ख्याल***–विचार। ***स्वप्न***–सपना। ***संध्या***–शाम।

पृष्ठ संख्या-68 : ***चित्र-विचित्र***–अजीब तरह के। ***तनिक***–जरा भी। ***स्वच्छंदता***–स्वंतत्रता। ***बेखटक***–बिना किसी डर के। ***संकोच***–शर्म। ***पलभर***–क्षणभर। ***सकुचाना***–शर्माना। ***बोधा***–ज्ञात। ***भयभीत***–डरना।

पृष्ठ संख्या-69 : ***चित्त***–मन/हृदय। ***प्रफुल्लित***–प्रसन्न। ***साँझ***–शाम। ***विरान***–उदास। ***बाट देखना***–प्रतीक्षा करना।

पृष्ठ संख्या-70 : ***निरी***–बिल्कुल। ***अनजान***–नासमझ। ***राह देखना***–इन्तजार करना। ***मालामाल***–बहुत धन। ***तृष्णा***–चाह। ***किस्मत***–भाग्य।

पृष्ठ संख्या-71 : ***प्रसन्न***–खुश। ***नादान***–नासमझ। ***अनगिनत***–जिनकी गिनती न हो।

पृष्ठ संख्या-72 : ***उजेला***–उजला। ***चैन***–शांति। ***भय***–डर। ***कठोर***–सख्त। ***स्पर्श***–छूना।

पृष्ठ संख्या-73 : ***ढ़ाढस***–हिम्मत। ***चिपकना***–पकड़ना।

सेठ माधवदास और नन्ही चिड़िया की बीच बातचीत अर्थात दोनों में संवाद -

उड़ती हुई चिड़िया जब सेठ के बगीचे में आई -

सेठ माधवदास उस चिड़िया की बच्ची को देख कर बहुत खुश हो गया |

सेठ माधव दास उस चिड़िया की बच्ची को देख कर बहुत खुश हो गया | और उसे अपने बारे में बताने लगा |

चिड़िया सेठ की बातें सुन कर डर गई और जल्दी ही वहाँ से चले जाने की बात कहने लगी|

सेठ ने उस चिड़िया से कहा , तुम यहीं पर ठहर जाओ | यह सुनकर वह और भी घबरा जाती है| और कहती है वह तो सुस्ताने के लिए यहाँ पर बैठ गई थी, बस अभी थोड़ी देर में अपनी माँ के पास चली जाएगी |

चिड़िया कहती है, मैं तो इस बगीचे में सूरज की धूप खाने, हवा से खेलने और फूलों से बात करने के लिए घर से उड़ आई थी।

माधवदास ने चिड़िया को अपने पास रखने के लिए उसने चिड़िया के सामने अपने धन दौलत की लालच दी |

5. 'माँ मेरी बाट देखती होगी' – नन्ही चिड़िया बार-बार इसी बात को कहती है। आप अपने अनुभव के आधार पर बताइए कि हमारी ज़िंदगी में माँ का क्या महत्त्व है?

चिड़िया का अपनी माँ के प्रति प्यार ----

क्योंकि बच्चो ------ हमारे जीवन में माँ का स्थान सर्वोपरि है। माँ से ही जीवन के सारे सुख मिलते हैं। माँ अपने बच्चें की खुशी में खुश होती है तथा बच्चों के किसी भी प्रकार के कष्ट से भावुक हो जाती है। माँ हमें जन्म देती है, हमारा पालन-पोषण करती है तथा सुख या दुःख में हमारा साथ नहीं छोड़ती। इसी तरह का प्यार चिड़िया तथा उसकी माँ का भी है। इसी कारण चिड़िया बार-बार माँ को याद करके उसके पास जाने की ज़िद करती है।

उसे सोने चाँदी से कुछ लेना देना नहीं था|

यही कारण था कि वह माधव दास के बहकावे में नहीं आई। उसके लिए उसकी माँ की गोद सबसे प्यारी थी।

कहानी में बताया गया है कि कैसे सेठ माधव दास के जीवन में खालीपन था। वह चिड़िया से कहता है कि उसका महल सुना है और वहाँ कोई भी चहचहाता नहीं है। वह चिड़िया को साथ रहने के लिए प्रलोभन देना और केवल अपने अकेले पन को दूर करने के लिए उसे पकड़ने का प्रयास करना यह दर्शाता है कि सारी संपन्नताओं के बाद भी वह सुखी नहीं था।

हिंदी कॉमिक्स -

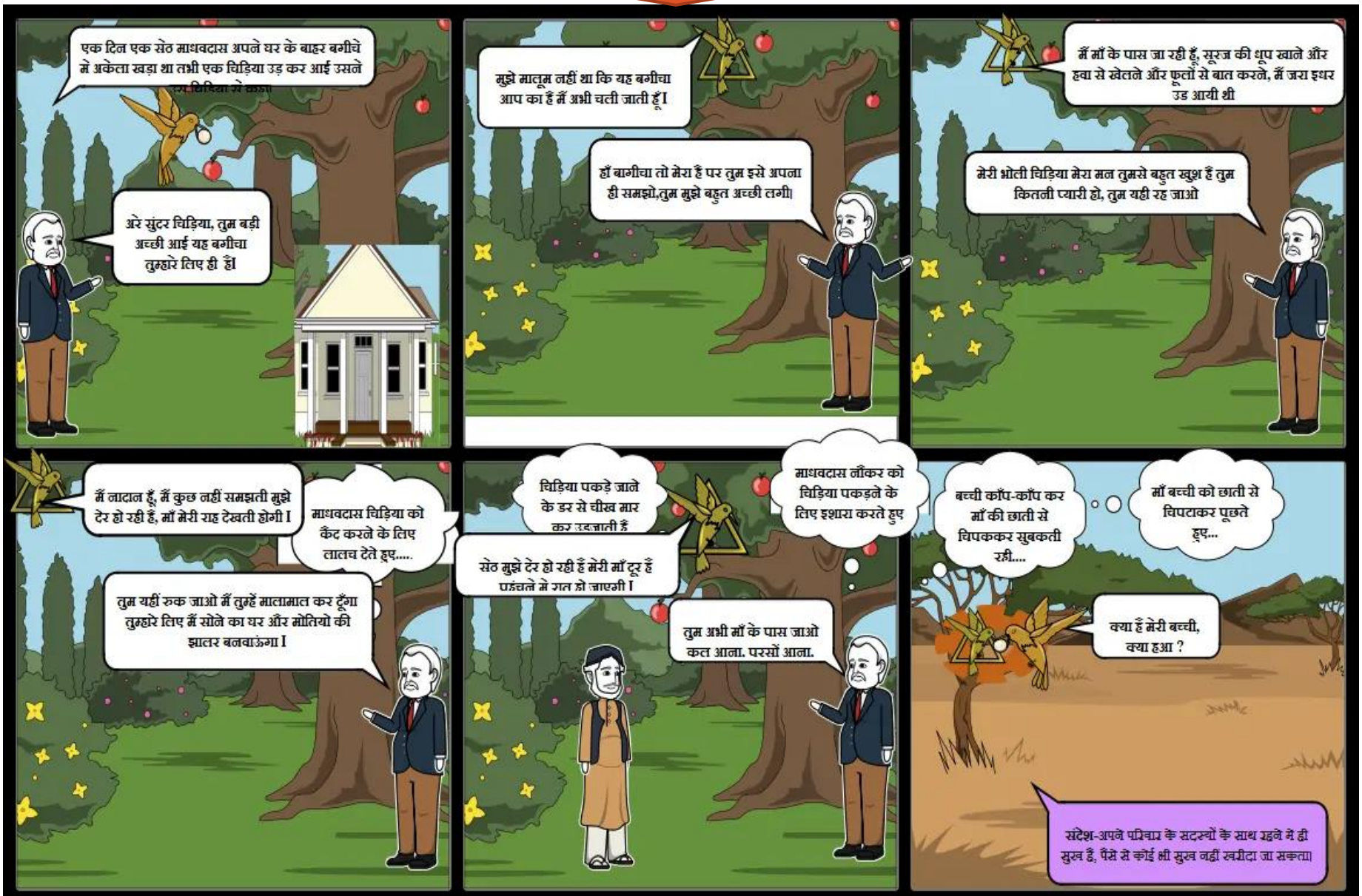
एक दिन एक सेठ माधवदास अपने घर के बाहर बगीचे में अकेला खड़ा था तभी एक चिड़िया उड़ कर आई उसने
अरे सुंदर चिड़िया, तुम बड़ी अच्छी आई यह बगीचा तुम्हारे लिए ही हैं।
मुझे मालूम नहीं था कि यह बगीचा आप का हैं मैं अभी चली जाती हूँ।
हाँ बागीचा तो मेरा हैं पर तुम इसे अपना ही समझो,तुम मुझे बहुत अच्छी लगी।
मैं माँ के पास जा रही हूँ, सूरज की धूप खाने और हवा से खेलने और फूलों से बात करने, मैं जरा इधर उड आयी थी
मेरी भोली चिड़िया मेरा मन तुमसे बहुत खुश हैं तुम कितनी प्यारी हो, तुम यही रह जाओ
मैं नादान हूँ, मैं कुछ नहीं समझती मुझे देर हो रही हैं, माँ मेरी राह देखती होगी।
माधवदास चिड़िया को कैद करने के लिए लालच देते हुए.....
तुम यहीं रुक जाओ मैं तुम्हें मालामाल कर दूँगा तुम्हारे लिए मैं सोने का घर और मोतियो की झालर बनवाऊंगा।
चिड़िया पकड़े जाने के डर से चीख मार कर उड़ जाती हैं
माधवदास नौकर को चिड़िया पकड़ने के लिए इशारा करते हुए
सेठ मुझे देर हो रही हैं मेरी माँ दूर हैं पहुंचने में रात हो जाएगी।
तुम अभी माँ के पास जाओ कल आना, परसों आना.
बच्ची काँप-काँप कर माँ की छाती से चिपककर सुबकती रही....
माँ बच्ची को छाती से चिपटाकर पूछते हुए...
क्या हैं मेरी बच्ची, क्या हुआ ?
संदेश-अपने परिवार के सदस्यों के साथ रहने में ही सुख हैं, पैसे से कोई भी सुख नहीं खरीदा जा सकता।

कहानी में दिए गए चित्रों के द्वारा पूरी कहानी का वर्णन बच्चों! इस तरह से है जिससे आपको सारी कहानी याद हो जाएगी |

चित्र 1

चित्र 2

चित्र 3

चित्र 4

चित्र 5

सेठ माधवदास

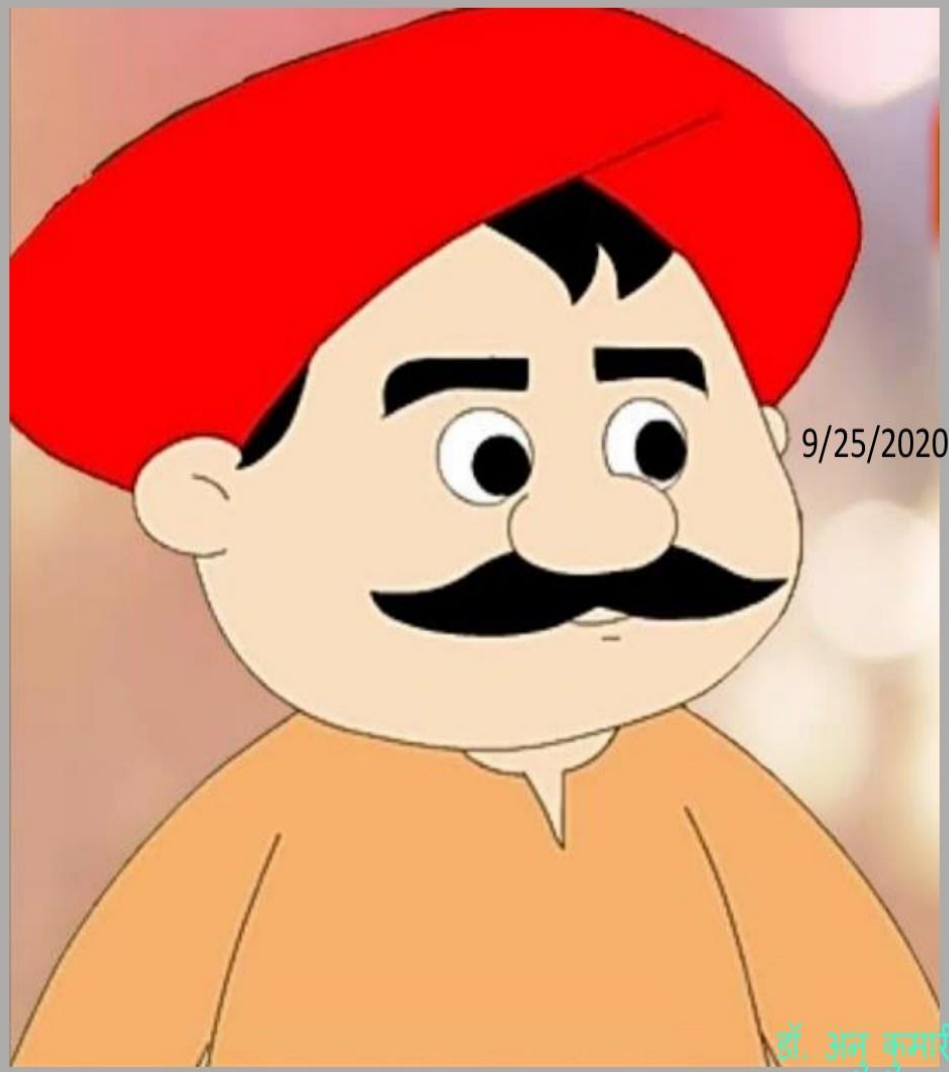

9/25/2020

कला प्रेमी, बुरी आदत नहीं, संगमरमर का बंगला, सुंदर बाग़, नौकर-चाकर, (सुख चैन का अभाव)

चिड़िया की बच्ची उड़ती हुई आई और बगीचे में यहाँ से वहाँ उड़ने लगी|
सेठ माधवदास उसकी सुंदरता की देखकर मुग्ध हो गया |
माधवदास उसे अपने धनी होने के बारे में बताता है ताकि वह उसके पास ही ठहर जाए |
सेठ की बातें सुन कर चिड़िया डर जाती है, सेठ अपने नौकर के साथ चिड़िया को पकड़ने लगता है |
तब नन्ही चिड़िया चीख मार कर चिल्ला देती है और तेज़ी से उड़कर माँ की गोद में सुबकने लगी |
कहानी के बारे में सोचो और समझो !

मौखिक प्रश्न-

* चिड़िया किसके बगीचा में पहुँच गई?
* संपन्न व्यक्ति का नाम क्या है?
* चिड़िया से उसने क्या–क्या बातें की?
* चिड़िया क्या चाहती है?
* माधवदास चाहता है कि चिड़िया वहीं रहे। इस हेतु वह क्या–क्या दलीलें देता है?

1 दुनिया में सबसे ज्यादा चिड़िया पूर्व एशिया में पाई जाती है|
2 दोस्तों अगर वैज्ञानिकों की माने तो दुनिया में चिड़ियों की करीब 43 प्रजातियाँ हैं|
3 घोंसला बनाने की ज़िम्मेदारी मेल चिड़ियों की होती है|
4 चिड़िया दिल्ली और बिहार की राष्ट्रीय पक्षी हैं|
5 बच्चों! भले ही चिड़ियों की गिनती पानी के पक्षियों से नहीं होती लेकिन इनमें तैरने की शक्ति भी पाई जाती है|
6 चिड़िया जब उदास होती है तो अपने तनाव को कम करने के लिए अपनी गर्दन को बार-बार झटकती हैं|
7 बच्चों! चिड़िया करीब तीन साल तक जीवित रहती है लेकिन अगर चिड़ियों को कैद करके रखा जाए तो ये 12 से 14 साल तक जीवित रह सकती है लेकिन एक ऐसी चिड़ियाँ है जो 23 साल तक जीवित रही थी और ये अब तक का सबसे बड़ा रिकॉर्ड है|

चिड़िया के बारे में कुछ और जानकारी-

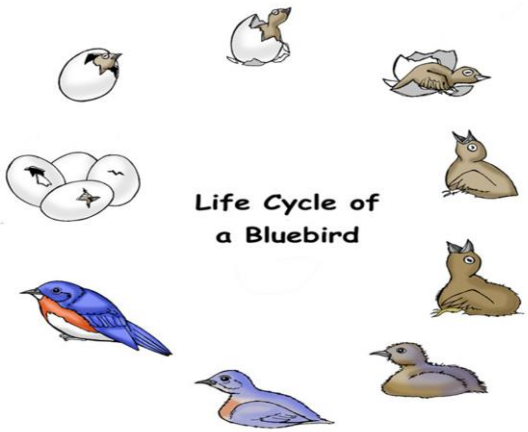

गृहकार्य– सुलेख,चित्र,कठिन शब्दार्थ|

संवाद लेखन- H.W

अपने और किसी पक्षी के बीच में एक संवाद लिखिए|